3. समाजशास्त्रीय सिद्धांत सार्वभौमिक हैं — समाजशास्त्र जिन सिद्धांतों का निर्माण करता है वे सार्वभौमिक होते हैं। यदि परिस्थितियाँ परिवर्तित न हों तो वे सिद्धांत सदैव खरे उतरते हैं।

4. समाजशास्त्र की विषय सामग्री तथ्यों द्वारा प्रमाणित की जा सकती है। इसे किसी भी समय और किसी के द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है।

5. समाजशास्त्र के सिद्धांत की परीक्षा — समाजशास्त्र के सिद्धांतों की परीक्षा और पुनर्परीक्षा में सदैव सत्य निकलते हैं। इसकी सत्यता की परीक्षा कभी भी की जा सकती है।

6. समाजशास्त्र कार्य कारण के सम्बन्धों की व्याख्या करता है और उसमें सम्बन्ध स्थापित करता है। घटनाएँ किस प्रकार होती है की व्याख्या करता है। संक्षेप में समाजशास्त्र में "क्यों" का उत्तर दिया जाता है।

7. समाजशास्त्र 'क्या है' के आधार पर 'क्या होगा' की ओर संकेत करता ही है परंतु 'क्या होना चाहिए' पर समाजशास्त्र कोई प्रकाश नहीं डालता।

इससे स्पष्ट है कि समाजशास्त्र की प्रकृति वैज्ञानिक है लेकिन प्राकृतिक वैज्ञानिकों को इसमें अनेक आपत्तियाँ हैं। जैसे- वस्तुनिष्ठता का अभाव, प्रयोगशाला का न होना, विषय-सामग्री को मापने में असमर्थ होना इत्यादि। लेकिन ये सभी आरोपों के विश्लेषण में इसे मिथ्या पाया गया लेकिन सामाजिक विज्ञानों की विषय सामग्री बड़ी जटिल है और सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन में अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं।

समाजशास्त्र के प्रकृति की विशेषता (characteristics of the Nature of sociology) —

(Robert Biestedt) राबर्ट बीरस्टेड ने अपनी पुस्तक "The Social order" में समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति की विशेषताओं का उल्लेख किया है। —

1. समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, न कि प्राकृतिक विज्ञान — समाजशास्त्र की विषय सामग्री सामाजिक घटनाएँ हैं न कि प्राकृतिक। यह अन्तर विषय-सामग्री और दृष्टिकोण का है, न कि पद्धति का। समाजशास्त्र भी उन्हीं पद्धतियों का प्रयोग करता है जिसका प्राकृतिक विज्ञान करते हैं।

2. समाजशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है न कि आदर्शात्मक — समाजशास्त्र केवल वास्तविक परिस्थितियों अर्थात् 'क्या है' का ही अध्ययन करता है, 'क्या होना चाहिए' अर्थात् आदर्श से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए बीरस्टीड ने इसे एक वास्तविक विज्ञान कहा है।

3. समाजशास्त्र विशुद्ध विज्ञान है, व्यवहारिक विज्ञान नहीं है। विशुद्ध विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का उद्देश्य मानव समाज से सम्बन्धित वास्तविक ज्ञान का संग्रह करना है, उस ज्ञान को प्रयोग में लाना नहीं। उन्हें व्यवहार में लाने का कार्य दूसरे विशिष्ट सामाजिक विज्ञान करते हैं।

4. समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान है, मूर्त नहीं — समाजशास्त्र में हम समाज के सदस्यों के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं, जो स्वयं अमूर्त हैं।

5. समाजशास्त्र सामान्य विज्ञान है, विशेष विज्ञान नहीं — समाजशास्त्र में किसी घटना के विवेचन में किसी एक कारण को महत्व न देकर प्रत्येक घटना को अनेक आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, प्रौद्योगिक तथा पर्यावरण सम्बन्धी कारकों की पृष्ठभूमि में स्पष्ट करता है।

6. समाजशास्त्र तार्किक और अनुभवसिद्ध विज्ञान है — समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा तथ्यों का अध्ययन किया जाता है, जिन्हें तर्क के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

by — Dr. Sangeeta Prakash

Scanned with CamScanner